वर्तमान राजनीति में महात्मा गांधी के विचारों की सार्थकता एवं महत्व

Ideology of M.K. Gandhi's and its importance in Present politics

अमृत लाल चंद्रभाष
(सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान)
शोधार्थी :– राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय लाल चक्रधर शाह महाविद्यालय अम्बागढ़ चौकी

शोध–आलेख सार :– महात्मा गांधी सच्चे समाज सुधारक होने के साथ–साथ एक महान् राजनीतिक शुभ चिंतक भी थे। महात्मा गांधी समाज को उसके निचले स्तर से ऊपर उठाने के लिये, सबसे पहले समाज सुधार की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना चाहते थे। सच्ची राजनीति तभी हो सकती है, जब राजनीति करने वाले व्यक्ति समाज में रहकर अपने आस–पास के रहने वाले गरीब, दीन–दुखियारियों की सेवा कर सके। गरीबों एवं दीन–दुखियों के आँख से आँसू पोंछ सके। समाज के कमजोर वर्ग के लोंगों को ऊपर उठाने में अपना जीवन न्योछावर कर सके। किन्तु आज का वर्तमान परिवेश बड़ा कष्ट दायक हो रहा है। आज की राजनीति में मैकियावली प्रवृत्ति की प्रधानता हो गयी है। मैकियावली की सिद्धांत में राजनीति में नैतिकता का कोई महत्व नहीं है। जिसके कारण हमारा राजनीतिक परिवेश में छल–छद्मयुक्त राजनीति की साम्राज्य खड़ी हो रही है। और इस प्रकार की कुटिल राजनीति का प्रचलन जोर पकड़ रहा है। राजनीति नैतिकता विहीन हो रहा है। यह स्थिति किसी भी देश या समाज के लिये उचित प्रतीत नहीं होती।

महात्मा गांधी की राजनीति में नैतिकता संबंधी विचार :– महात्मा गांधी जी का विचार था, कि राजनीति में नैतिकता मानव कल्याण की साधन होना चाहिये। महात्मा गांधी की राजनीतिक दर्शन और उनके द्वारा दिये गये समय–समय का अभिषण से स्पष्ट होता है, कि नैतिकता राजनीति विज्ञान का साधन नहीं साध्य है। जिससे राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान उनकी कार्य नीति और राजनीतिक चिन्तन तथा व्यवहार वस्तुतः यथार्थ का प्रकटीकरण करता है। महात्मा गांधी का कहना है, कि कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिये, तभी सच्ची राजनीति का महत्व सार्थक होता है।

मुख्य शब्द :– नैतिकता, मानव कल्याण, सार्थकता, प्रकटीकरण, छद्मयुक्त।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से प्राथमिक, द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

वर्तमान राजनीति में महात्मा गांधी जी के विचारों की सार्थकता एवं महत्व :– महात्मा गांधी जी के राजनीतिक विचार वास्तव में कोरा कल्पना नहीं है। उन्होंनें कहा कि मेरे सत्य का प्रयोग अथवा आत्म कथा में मैं किसी सिद्धांत में विश्वास नहीं करता मैंने जीवन में समाज के प्रति जो यथार्थ प्रयोग किया है। जो सत्याभाषी, एवं मौलिक रूप से मानव समाज में निश्चित रूप आत्मसात करने वाली हो। वहीं से सच्ची राजनीति का शुभारंभ होता है। इसलिये राजनीति उसे करनी चाहिये, जो समाज का सच्चा सेवक या उपासक हो। जो स्वयं की आवश्यकताओं का बलिदान करते हुये, समाज के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर अपने आप को समाज और देश के लिये बलिदान कर सके। जो व्यक्ति गरीब क्या है, उसे कभी देखा नहीं, गरीबों के समस्या क्या होती है, उसे पहचाना नहीं, वह व्यक्ति उस समस्या का समाधान कैसे करेगा। आज कल के नेता लोगों को स्वप्न सब्ज बाग दिखाकर झुठा आश्वासन दे कर, छल से वोट हासिल कर जनप्रतिनिधी बन

जाते है। वास्तव में जनता से कोई वास्ता नहीं रखता। यह बहुत ही घृणित चाल है, जिसे जनता को समझने में बहुत देर हो जाती है। महात्मा गांधी जी का विश्वास था, कि यदि हमें समाज की सच्चा सेवा करना है। तो हमें समाज के अनुकूल वरण करना होगा, इसी कारण महात्मा गांधी जी अपना सर्वस्व बलिदान करते हुये, एक धोंती और एक लाठी लेकर सामाजिक राजनीतिक आंदोलन में कूद पड़े, अंग्रेजों के खिलाफ गांधी जी ने 1917 में पहली बार सत्याग्रह की। महात्मा गांधी जी ने चंपारण के किसानों का समस्या देखने पहुंचे, यहां पहुचने के बाद उन्होंने गरीबी और बदहाली की जो स्थिति देखी कि किस तरह एक स्त्री अपनी धोंती की एक किनारा स्नान करते वक्त भीगा रही थी, और उसी धेंती के दूसरे किनारे जो सूखा था, पहन रही है। उसने सोंचा हमारा देश के नागरिक कितने गरीबी से जीवन व्यतित कर रहा है। उसकी आत्मा पसीज गया। महात्मा गांधी जी ने सोंचा हम कैसे ऐशो आराम की जिन्दगी व्यतीत कर रहे है। उन्होंनें फैसला किया, कि वे आजीवन एक धोंती पहन कर जीवन व्यतीत करेंगें। ताकि कपड़ो का खर्च कम हो और वह कपड़ा गरीबों को मिल सके। गांधी जी ने कहा कि यह कैसी समाज सुधार जिसमें गरीबों को खाने की मोहताज हो, और हम राजशाही जीवन जी रहे हैं। महात्मां गांधी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं होता था। जो कहते उसको जीवन में आत्मसात करते थे। इसी कारण महात्मा गांधी आज हमारे राष्ट्रपिता हैं।

समस्या चयन :–

राजनीति विज्ञान के अंतर्गत आज चिंता का विषय है। कि राजनेता अपने को समाज सुधारक समझते हैं। किन्तु गांधी जी का वह त्याग बलिदान कहीं देखनें को नहीं मिलता। नेता अपने, धन और पावर में वृद्धि करने में लगे हुये हैं। जैसे ही कोई राजनेता विधायक और मंत्री बनता है। उसकी संपत्ति में कई गुना वृद्धि हो जाती है। चुनाव में बड़े–बड़े वादे जरूर करते हैं। जब निभाने का समय आता है, तो मुंह फेर लेते हैं। जनता हमेंशा धोखा का शिकार रहता है। राजनेता सत्ता को प्रात्त करने के लिये छल–प्रपंच का सहारा लेने से नहीं हिचकिचाते। इस कारण से राजनीति दूषित होता जा रहा है। राजनीति के इस दोष को सच्चे दिल से गांधी जी के अनुकरण से दूर किया जा सकता है।

उद्देश्य :–

1. स्वच्छ समाज का निर्माण करना।
2. राजनीति में व्याप्त बुराई को दूर करना।
3. देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को रोकनें की प्रयास करना।
4. जनता को जागरूक करना।
5. समाज में व्याप्त विसंगति को दूर करना।
6. महात्मा गांधी जी के आदर्शों को पुनः प्रतिस्थापित करना।

सामाजिक सर्वेक्षण :– सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक जीवन के किसी विशेष पक्ष, विषय, प्रसंग अथवा समस्या के सम्बंध निर्भय योग्य तथ्यों के संकलन कर विश्लेषण करने की प्रकिया है। जो कि वैज्ञानिक सिद्धांतों व मान्यताओं पर आधारित होनें के कारण अनुभवमूलक निष्कर्षों को निकालने में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होता है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा का काई न कोई अपना महत्व या उद्देश्य जरूर होता है। सामाजिक सर्वेक्षण

शोध की एक विधि है। इस विधि का भी एक निश्चित उद्देश्य है। सामाजिक जीवन के विविध पहलू है। जिनका अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा ही संभव है।

उपकरण :— सामाजिक सर्वेक्षण के लिये गूगल फार्म का सहारा लिया गया है। जिसमें समस्त भारत क्षेत्र से सर्वे रिपोर्ट कराया गया। जिसमें प्रश्नावली विधि का प्रयोग करते हुये, दस प्रश्न तैयार कर, प्रश्नों को ऑन लाईन सर्वे किया। जिसमें समस्त भारत राज्यों से उत्तरदाताओं का सहभागितापूर्ण उत्तर प्राप्त हुआ। एक सौ सत्तर उत्तरदाताओं ने अपना उत्तर दिया। मध्य प्रदेश, राजस्थान, प. बंगाल, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, पंजाब, गुजरात, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, हिमांचलप्रदेश, कर्नाटक, त्रिपुरा, असाम, हरियाणा, तेलंगाना, दिल्ली, ओडिसा, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, जम्मू कश्मीर ।

तथ्य संकलन :— अध्ययन में सम्बंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रश्नावली अनुसूची के प्रयोग के आधार पर अवलोकन किया गया इसमें प्राथमिक डाटा और द्वितीयक डाटा का संकलन करते हुये, संदर्भ ग्रंथों, पूर्व शोध जर्नलस, तथा सम्बंधित साहित्य प्रयोग में लाया गया है।

वर्गीकरण :— अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त सूचनाओं को सर्वप्रथम क्रम में लगाकर परीक्षण किया। परीक्षण पश्चात सारणीयन से प्राप्त सूचनाओं का वर्गीकरण कर सम्पूर्ण सारणियनों से प्रतिशत निकालाया गया ।

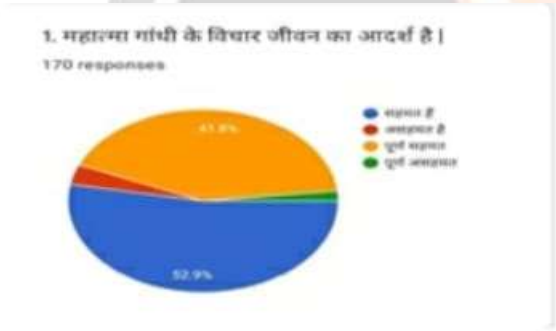

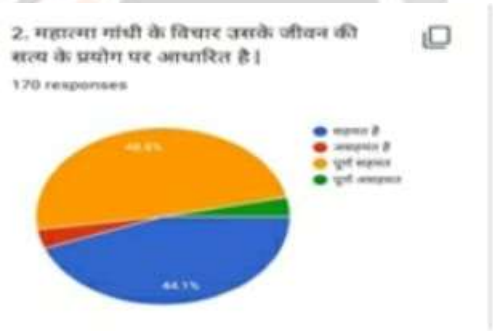

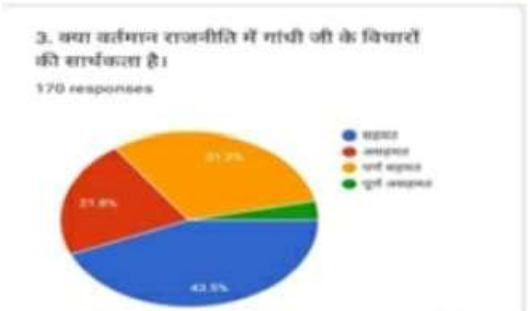

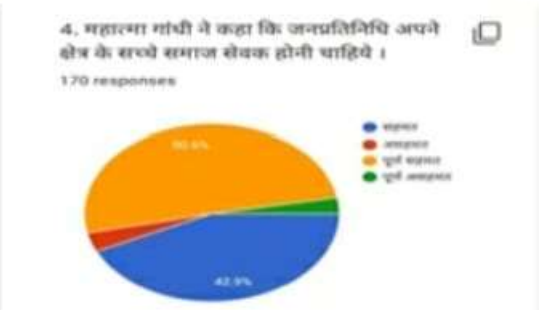

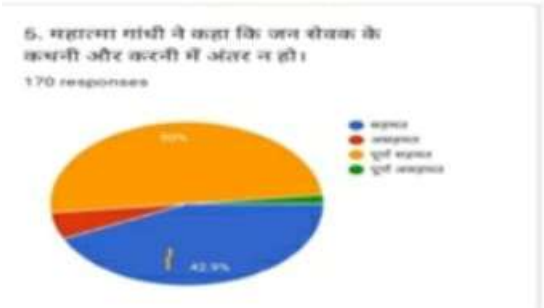

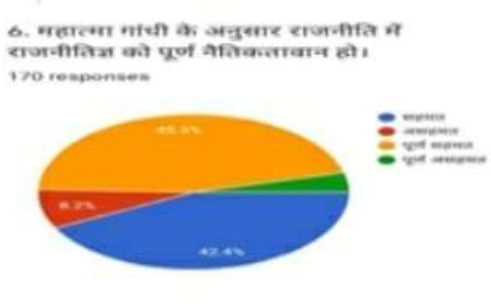

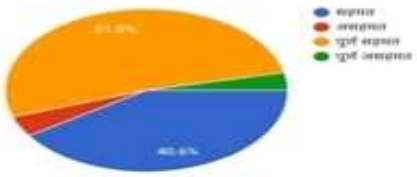

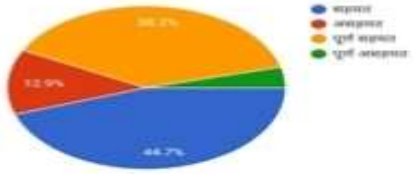

8. गांधी जी ने पूरा जीवन समाज सेवा के लिए बलिदान था।
170 responses
40.6%
9. आपके अनुसार गांधी जीके विचारों का वर्तमान राजनीति परिदृश्य में महत्व है।
170 responses
12.9%
44.7%
10. महात्मा गांधी जी के विचारों पर आपके सुझाव।
170 responses
गांधी जी के विचारों का आज भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व में स्वीकार करता है।उनके विचार सिर्फ विचार नहीं है।अपितु एक सकारात्मक सिद्धान्त है
गांधीजी भारत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे। उनके विचार सत्य और अहिंसा आज भी जीवन की हर पहलुओं पर लागू होता है चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक सभी में लागू होता है। गांधी जी के विचारों से ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। आज भी गांधीजी के विचार प्रासंगिक है।

विश्लेषण :— सामाजिक सर्वेक्षण गुगल डॉस फार्म में किया जिसका उत्तरदाताओं से जो उत्तर प्राप्त हुआ है। उनका विश्लेषण इस प्रकार है। 1. सहमत है। 2. असहमत हैं। 3. पूर्ण सहमत 4. पूर्ण असहमत

1. पहला प्रश्न महात्मा गांधी के विचार जीवन का आदर्श है। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 41.8 प्रतिशत पूर्ण सहमत दूसरा– 52.9 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 94.7 प्रतिशत हो रहा है। तथा 3.1 प्रतिशत असहमत एवं 2.2 प्रतिशत पूर्ण असहम. त। दोनों का योग करने पर 5.3 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 94.7 प्रतिशत सहमत और 5.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

2. दूसरा प्रश्न महात्मा गांधी के विचार जीवन की सत्य के प्रयोग पर आधारित है। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 48.8 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 44.1 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 92.9 प्रतिशत हो रहा है। तथा 3.55 प्रतिशत असहमत एवं 3.55 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 7.1 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 92.9 प्रतिशत सहमत और 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

3. तीसरा प्रश्न क्या वर्तमान राजनीति में गांधी जी के विचारों की सार्थकता है। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 31.2 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 43.5 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 74.7 प्रतिशत हो रहा है। तथा 21.8 प्रतिशत असहमत एवं 3.5 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 25.3 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 74.7 प्रतिशत सहमत और 25.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

4. चतुर्थ प्रश्न महात्मा गांधी ने कहा कि जनप्रनिधि अपने क्षेत्र के सच्चे समाज सेवक होनी चाहिये। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 50.6 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 42.9 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 93.5 प्रतिशत हो रहा है। तथा 3.25 प्रतिशत असहमत एवं 3.25 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 6.5 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 93.5 प्रतिशत सहमत और 6.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

5. पंचम प्रश्न महात्मा गांधी ने कहा कि जन सेवक के कथनी और करनी में अंतर न हो जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 50 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 42.9 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 92.9 प्रतिशत हो रहा है। तथा 4.55 प्रतिशत असहमत एवं 2.55 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 7.1 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 92.9 प्रतिशत सहमत और 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

6. छठवां प्रश्न महात्मा गांधी के अनुसार राजनीति में राजनीतिज्ञ को पूर्ण नैतिकतावान हो। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 45.3 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 42.4 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 87.7 प्रतिशत हो रहा है। तथा 8.2 प्रतिशत असहमत एवं 4.1 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 12.3 प्रतिशत है। इस प्रकार

सर्वाधिक 87.7 प्रतिशत सहमत और 12.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

7. सातवां प्रश्न महात्मा गांधी के विचार के अनुसार राजनीति छल–कपट एवं प्रपंच से रहित हो। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 49.4 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 40.6 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 90 प्रतिशत हो रहा है। तथा 7.1 प्रतिशत असहमत एवं 2.9 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 7.1 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 90 प्रतिशत सहमत और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

8. आठवां प्रश्न महात्मा गांधी ने पूरा जीवन समाज सेवा के लिये बलिदान था। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 51.8 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 40.6 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 92.4 प्रतिशत हो रहा है। तथा 3.8 प्रतिशत असहमत एवं 3.8 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 7.6 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 92.4 प्रतिशत सहमत और 7.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

9. नवम प्रश्न आपके अनुसार गांधी जी के विचारों का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में महत्व है। जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा दिया गया उत्तर इस प्रकार है। पहला– 38.2 प्रतिशत पूर्ण सहमत सहमत दूसरा– 44.7 प्रतिशत सहमत है। दोनों का योग करने पर 82.9 प्रतिशत हो रहा है। तथा 12.9 प्रतिशत असहमत एवं 4.2 प्रतिशत पूर्ण असहमत। दोनों का योग करने पर 17.1 प्रतिशत है। इस प्रकार सर्वाधिक 82.9 प्रतिशत सहमत और 17.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति दिया है, जो बहुत न्युनतम है।

10. महात्मा गांधी जी के विचरों पर आपके सुझाव।

जिसमें 170 उत्तरदाताओं के द्वारा सुझाव दिया है। कि वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों को पूर्णतः स्वीकार कारने लायक है। किन्तु लोग मात्र अपना उल्लू सीधा करने में, लगे हुये हैं। समाज सेवा से उसका कोई लेना देना नहीं है। इसी कारण से समाज की स्थिति में जितना सुधार होना चाहिये, उतना सुधार नहीं हो पा रहा है। आज गांधी जी के विचारों का समाज में उसकी सार्थकता एवं महत्व बहुमूल्य प्रक्षेपित होता है।

उपसंहार :– वर्तमान राजनीति में महात्मा गांधी के विचारों की सार्थकता एवं महत्व विषय पर मैंने सामाजिक सर्वेक्षण गुगल डॉस फार्म में किया जिसका उत्तरदाताओं से जो उत्तर प्राप्त हुआ है। उससे हम निष्कर्ष निकलते हैं। तो स्पष्ट हो जाता है कि महात्मा गांधी का जीवन हम सबके लिये आदर्श है। हमें उसकी समाज सेवा से के कार्यों से प्रेरणा लेना चाहिये। राजनीति सिर्फ सत्ता लोलुपता के लिये नहीं है। बल्कि *'हरेक के आँखों आँसू हरेक के आँख से पोंछ सके''।* की कहावत चरितार्थ हो सके। राजनीति विशुद्ध होंनी चाहिये। छल प्रपंच का प्रयोग नहीं होंनी चाहिये। राजनेताओं के कथनी और करनी में अंतर नहीं होंनी चाहिये। मेरा पूर्ण रूप से मानवीय एकता में विश्वास है। मेरा वास्तविक उद्देश्य अधिक अच्छी सामाजिक व्यवस्था का अन्वेषण करना और विश्व के समझ जीवन और कर्म का ऐसा आदर्श प्रस्तुत करना है। जो सार्वभौम रूप से सभी को स्वीकार्य हो, जिनका मुख्य उद्देश्य जाति, धर्म, पंथ, रंग, तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के घातक कृत्रिम भेदों को ध्वस्त कर सके और एक समता मूलक समाज की स्थापना कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. अमरेश्वर अवस्थी ' आधुनिक भारतीय समाज सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन,'' रिसर्च पब्लिशर्स, 1977, पृ. 430
2. डॉ. इकबाल नारायण ' भारतीय राजनीतिक विचारक''– ग्रंथ विकास प्रकाशन, जयपुर, 2001 पृ. सं. 129,130
3. डॉ. महेश प्रसाद सिंह 'गांधी के सपनो का भारत'' ज्ञान गंगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010 पृ. सं. 75–76
4. सी.फ.एनवेडस, महात्मॉ गांधी उनकी अपनी कहानी'' मद्रास प्रकाशन प्रेस, 1922 पृ. सं. 354
5. गोपीनाथ धवन, 'सर्वोदय तत्व दर्शन,'' अहमदाबाद प्रकाशन– 1957, पृ. सं. 74
6. डॉ. वी.पी.वर्मा, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन,'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा, 1957, पृ.सं. 265
7. डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधराऐं, श्री पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1994 पृ. सं. 386–78
8. मोहनदास करमचन्द गांधी, अनुवादक महाबीर प्रसाद पोद्दार सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली